Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

पूर्वकाल में देवनदी गंगा का साहित्यिक उल्लेख

डॉ दीपा जोशी

प्रवक्ता संस्कृत, डायट, बागेश्वर

पुण्यदायिनी गंगा युगों से धरती को पवित्र करते हुए भारत की ही नहीं अपितु विश्व की गौरवमयी संस्कृति और सभ्यता का सृजन करती रही है। वेदों में भी प्रथम ऋग्वेद के दो स्थलों पर (10.75.5) तथा 6.45.31 गंगा का उल्लेख आता है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त के अधिकांश मंत्रों में ही प्रार्थना की गई है कि पृथ्वी से निकलने वाली जलधाराएँ अन्न, दूध, औषधियाँ हमारे लिए कल्याणकारक एवं पुष्टिवर्धक होवें। ये धाराएँ या नदियाँ यदि वेदों में उल्लिखित है तो निश्चय ही देवी गंगा भी वेदों का भाग रहीं होगी क्योंकि गंगा प्राचीनतमा देवनदी है। अथर्ववेद में लिखा गया है–

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु।।[1]

स्पष्ट है कि गंगा का अस्तित्व पूर्ववैदिक काल, उत्तर ऋग्वेद काल में अन्य नदियों से न्यून नहीं था। पौराणिक शास्त्रों, धर्मग्रन्थों में गंगा की महात्म्यता का वर्णन है। आर्यकाल में आर्य लोग गंगा को एक नदी के रूप में जानते थे। परन्तु उसके गुण, औषधीय विशेषताओं एवं महत्त्व से अधिक परिचित नहीं थे। क्योंकि वह पंजाब में सिन्धु और सरस्वती नदी के क्षेत्र में रहते थे। 18 पुराणों में से अधिकांश पुराणों में गंगा की महिमा वर्णित है। पद्मपुराण में गंगा के उद्गमस्थल गंगोत्री की महिमा का उल्लेख मिलता है–

गंगोद्भेदं समासाद्य त्रिरात्रीषोषितो नरः।
वाजपेयपान्नोति ब्रह्मभूतो भवेत् सदा।।[2]

संसार के आदिग्रन्थ ऋग्वेद में नदियों में सर्वप्रथम गंगा का स्मरण किया गया है। साहित्य पुराणादि में गंगा स्नान, गंगाजल, गंगा–महिमा के अनेक वृतान्त वर्णित हैं। नारद पुराण के पूर्व 6.56 भाग में गंगा को सर्वोत्कृष्ट तीर्थ तथा माँ को सर्वश्रेष्ठ गुरु बताया गया है। ऋग्वेद में महाभारत, रामायण एवं अनेक पुराणों में माँ गंगा को पुण्यसलिला, पापानाशिनी, सरित्श्रेष्ठा, मोक्षप्रदायिनी एवं महानदी नाम से सम्बोधित किया गया है। धर्मशास्त्रों में उल्लेख मिलता है कि जो मनुष्य गंगा की सन्निधि में मृत्यु को प्राप्त होता है वह पुनः जन्म–मरण के चक्र से मुक्त हो मोक्ष प्राप्त करता है।

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि कामतोऽकामतोऽपि वा
गंगाया च मृतो मर्त्यः स्वर्ग मोक्षं च विदन्ति।।[3]

अर्थात् ब्रह्मपुराणानुसार ज्ञान से अथवा अज्ञान से इच्छा से अथवा अनिछा से जो गंगा में मृत्यु को प्राप्त करता है। वह स्वर्ग तथा मोक्ष का अधिकारी होता है। भविष्य पुराण में शिव ने स्वयं को काशी और अपने ज्ञान को गंगा की उपमा दी है। गंगा नदी को ब्रह्महत्या के पाप से मुक्ति दिलाने वाली भी बताया है। अथर्ववेद के **'सं मा सिंचन्तु नद्यः सं मा सिंचन्तु सिंधवः'** में गंगा को सिन्धु कहकर कृपा करने की प्रार्थना की गई है।[4] मनुस्मृति में कुरुक्षेत्र को पवित्र स्थान तथा गंगा को सर्वाधिक पवित्र नदी की संज्ञा प्राप्त है। भगवान कृष्ण ने स्वयं को नदियों में गंगा कहा है–**'स्त्रोतसामस्मि जाह्नवी'**[5]भारत के महान् ऋषियों, महात्माओं ने सदैव गंगा में प्राणत्याग की अभिलाषा की है। महर्षि वाल्मीकि भी इसी कामना हेतु गंगा से प्रार्थना करते है कि पृथ्वी को शृंगार माला, पार्वती जी की

सपत्नी और स्वर्गारोहण की विजय पताका स्वरूपिणी और हे माता भागीरथी! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे तट पर निवास करते हुए तुम्हारा जलपान करते हुए तुम्हीं पर दृष्टि लगाए मेरा शरीर पात हो।

मातः शैलसुतासपत्नी वसुधा श्रृंगारहारावलि,
स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवती भागीरथी प्रार्थये।
त्वत्तीरेक वसतस्त्वदम्बु पिवतस्त्वद्वीचिषु प्रेक्षत,
स्त्वन्नाम स्मरतसत्वदर्पितदृष्यः स्यान्मेषरीरवयः।[6]

महाभारत प्रणेता महाकवि वेदव्यास ने गंगा का सूक्ष्मतर विश्लेषण कर उसे श्रृंगार हारावली और स्वर्गारोहिणी वैजयंती बताया है। जैसे बिना चाँदनी की रात और बिना फूलों के वृक्ष शोभा नहीं पाते उसी प्रकार गंगाजी के कल्याणमय जल से वंचित देश और दिशाएँ भी शोभा एवं सौभाग्य से हीन हैं। व्यास का यह कथन भी उल्लिखित है कि जैसे गरुड़ को देखते ही सारे सर्प विषहीन हो जाते हैं उसी प्रकार गंगा के दर्शन मनुष्यों को पापहीन बना देते हैं। आदिकालीन एवं भक्तिकालीन कवियों ने गंगा की पवित्रता को आधार बनाकर अनेक रचनाओं का सृजन किया। हिन्दी के आदि महाकाव्य पृथ्वीराजरासो, वीसलदेवरासो में गंगोल्लेख है। जगनिककृत आल्हाखंड में गंगा यमुना, सरस्वती के त्रिवेणी संगम को पापनाशक बताया गया है। गंगा को आधार बनाकर रची गयी **'गंगालहरी'** आज भी बहुत प्रसिद्ध है। यह रचना जगन्नाथ मिश्र की है। जगन्नाथ मिश्र ने एक मुसलमान स्त्री से विवाह किया जिसका नाम लवंगी था। उनके इस विवाह से सभी को आपत्ति थी। काशी के ब्राह्मणों व अन्य सामाजिकों द्वारा वे जाति तथा समाज से बहिष्कृत किए गए। उन्होंने काशी के दशाश्वमेघघाट पर सपत्नी गंगालहरी की रचना की। गंगा लहरी के प्रत्येक पद में उन्होनें सामाजिक रूढ़ियों से आहत होकर माँ गंगा से मुक्ति की प्रार्थना की। घाट पर बनी 52 सीढियाँ प्रत्येक पद के साथ जलपूर्ण होने लगी। 52वें पद पर गंगा ने लवंगी और जगन्नाथ को स्पर्श कर स्वयं में आत्मसात कर लिया। इसके प्रथम पद में अमंगल नाश की प्रार्थना की गई है–

समृद्धं सौभाग्य सकल वसुधायाः किमपि तत्
महैष्वर्यं लीलाजनित जगतः खण्डपरषोः।
श्रुतीनां सर्वस्वं सुकृतमथ मूर्तं सुमनसां
सुधासौन्दर्यं ते सलिलमषिवं नः शमयतु।।[7]

अर्थात् हे माँ! महेश्वर शिव की लीला जनित इस सम्पूर्ण वसुधा की आप ही समृद्धि और सौभाग्य हो, वेदों का सर्वस्व सारतत्व भी आप ही हो, मूर्तिमान दिव्यता का सौन्दर्य सुधायुक्त आपका जल, हमारे सारे अमंगल का शमनकारी हो। गंगावतरण नाम से ही विख्यात 'गंगावतरण महाकाव्य' के रचयिता नीलकंठ दीक्षित हैं। इनका समय सत्रहवीं शताब्दी है, ये प्रख्यात दार्शनिक अप्पय दीक्षित के छोटे भाई के पुत्र थे। अप्पय दीक्षित से इन्होंने अध्ययन भी किया। इस महाकाव्य में इन्होंने भगीरथ के तप तथा उसके प्रभाव से गंगा के धरती पर उतरने का मनोहर वर्णन किया है। आधुनिककालीन भारतीय भाषाओं के साथ–साथ स्थानीय बोलियों में भी गंगा से संबंधित साहित्य का भण्डार पूर्णता को प्राप्त है। जगन्नाथ रत्नाकार कृत 'गंगावतरण' में कपिल मुनि द्वारा शापित सगर के साठ हजार पुत्रों के उद्धार हेतु 'भगीरथ तपस्या' से गंगा के भूमि पर अवतरित होने की कथा का वर्णन है। गंगा नदी के कई प्रतीकात्मक अर्थों का वर्णन जवाहर लाल नेहरु ने अपनी पुस्तक भारत एक खोज (डिस्कवरी ऑफ इण्डिया) में किया है। आर्य सभ्यता एशिया माइनर से आकर गंगा तट पर स्थित सप्त–सैन्धव प्रदेश में बसी। सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण गंगा स्वयं में अनेक साहित्यिक विशेषताओं को समाहित किए हुए है।

गंगोत्पत्ति, उद्भव, अवतरण के कारण इसे विभिन्न उपमाएँ संज्ञाएँ प्राप्त हुई। पुराणानुसार गंगा के अति लोकप्रिय नामों की संख्या 15 है। किन्तु गंगा 15 नामों तक ही सीमित नहीं है। इससे जुड़े प्रसंगों के आधार पर त्रिपथगा के असंख्य नाम सिद्ध होते है। विष्णुपदी, जाह्नवी, भागीरथी त्रिपथगा, सुरनिम्रगा, त्रिस्त्रोता, स्वपरापगा, ब्रह्मनदी, जटाशंकरी, सुरापगा, हेमावती, पातालगंगा, मंदाकनी, सुरनदी, त्रिवेणी, कुटिला, अलसतरंगिणी, खगा, आदि

नाम प्रसिद्ध हैं। भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित करने वाली गंगा के बारे में सामान्य जानकारी अपेक्षित पापनाशिनी, पुण्यदायिनी माँ गंगा की उत्पत्ति के संबंध में शब्दकल्पद्रुम में कहा गया है– **'गमयति प्रापयति ज्ञापयति, वा भगवत्पदं या शक्तिः सा गंगा'।**[8] अर्थात् जो शक्ति भगवान के पादपद्मों (चरणों) तक पहुँचा देती है, परतत्व स्वरूप बोध कराती है, वह गंगा है। पौराणिक स्त्रोतों के अनुसार शंकर की शिखा से गंगा की एक पतली धारा बिन्दुसर में गिरी थी जो अब गोचर कहा जाता है। यहाँ से 30 किमी लम्बा और दो किमी चौड़ा ग्लेशियर (हिमनद) आरम्भ होता है। यह ग्लेशियर दक्षिण दिशा में शिवलिंग शिखर के पास से तपोवन और नन्दवन को पार करता है और 15 किमी0 की यात्रा करके गोमुख पहुँचता है। जहाँ हिमनद का पिघलता पानी नदी धारा रूप में भागीरथी को जन्म देता है। गोमुख को पृथ्वी का मुख कहा जाता है। अनेक छोटी–छोटी धाराओं के रूप में गोमुख धारा से गंगा के दर्शन होते हैं। यहाँ गंगा का प्रवाह तेज है पर चौड़ाई कम है। कुछ दूर बहने के बाद इस धारा में भृगुसरोवर और भृगुशिखर से निकली भोजगाड़ नदी, चिरबासा ग्राम के पास भागीरथी से मिलती है। इस नदी धारा को देवगाड़ या 'वैतरणी' भी कहा जाता है। यही संयुक्त धारा गंगोत्री तक बहती है।[9] गंगोत्री हिमनद शहर से 19 किमी0 उत्तर की ओर 3892 किमी0 (12770 फीट) की ऊँचाई पर स्थित है। यह हिमनद 25 किमी0 लम्बा व 4 किमी0 चौड़ा और लगभग 40 मीटर ऊँचा है। इसी ग्लेशियर से भागीरथी एक छोटे से गुफानुमा मुख पर अवतरित होती है। इसका जल स्त्रोत 5000 मीटर ऊँचाई पर स्थित एक घाटी है। इस घाटी का मूल पश्चिमी ढलान की सतोपन्थ नामक चोटियों में है। गोमुख के रास्ते में 3600 मीटर ऊँचे चिरबासा ग्राम से विशाल गोमुख हिमनद के दर्शन होते हैं।[10] गंगोत्री धाम भारत के चार धामों में से एक है। गंगोत्री में ही गंगा मैया का मन्दिर है। गंगा उत्तर से यहाँ उतरती है। गंगा कहने को तो गोमुख से निकलती जल धारा से उत्पन्न होती है लेकिन वास्तव में गंगा अकेली जलधारा नहीं है। हिमाच्छादित नन्ददेवी, गुरला, मांधाता, धौलागिरि, गोसाईथान, कंचनजंगा एवं माउंट एवरेस्ट पर सूर्य की किरणों से पिघलती बर्फ गोमुख (3900 मी0 ऊँचा) तक पहुँचने वाली जलधारा में अपना–अपना योगदान देती हैं। यामुन (बंदरपूँछ) से लेकर नंदादेवी तक बूँद–बूँद पिघलती बर्फ गोमुख से 19 किमी0 दूर गंगोत्री पहुँचती है। जिसे गंगा का उद्गम स्थल माना जाता है।[11] केवल भारत ही नहीं बल्कि विश्व आस्था की प्रतीक गंगा अनेक छोटी धारा को स्वंय में समाहित कर उन्हें और भी मूल्यवती बना देती है। इन धाराओं में प्रमुख प्रधान धाराएँ भागीरथी, अलकनंदा, नन्दाकिनी, मंदाकिनी, पिण्डर, धौलीगंगा, नयार, जाड़गंगा आदि। देवप्रयाग से आगे सभी जलधाराओं का संयुक्त रूप 'गंगा' नाम से सर्वज्ञ है। गंगा भारत की महत्त्वपूर्ण एवं सबसे बड़ी नदी है। 200 किमी0 पहाड़ी घुमावदार संकरे रास्तों को पारकर गंगा नदी ऋषिकेश को पवित्र कर पहली बार मैदानी भाग का स्पर्श हरिद्वार में करती है। हरिद्वार को गंगाद्वार नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। गंगा गोमुख से लेकर बांग्लादेश तक पुण्य यश प्रवाहित करते हुए कुल 2510 किलोमीटर की दूरी तय करती है। 100 फीट (31मीटर) की अधिकतम गहराई वाली यह नदी भारतीय पुराणों और साहित्य में अपनी सौन्दर्यात्मक, धर्मात्मक महात्म हेतु भारतीय ही नहीं अपितु विदेशी साहित्य में भी मूर्धन्य स्थान रखती है।'[12]

गंगा को संसार का सबसे बड़ा डेल्टा (सुन्दरवन) बनाने के लिए भी प्रसिद्धि प्राप्त है। यह डेल्टा विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और बंगाल टाईगर का घर है। गंगा को कोलकाता से बंगाल की खाड़ी तक हुगली नाम से जाना जाता है। हुगली (गंगा) का अंतिम पड़ाव गंगासागर यानि सुन्दरवन में है। सुन्दरवन को पहले गंगासागर कहा जाता था क्योंकि इसी स्थान पर गंगा पर्वतों से उतरकर मैदानों को लाँघकर सागर में संगम करती है। कृत्तिवास रामायण के अनुसार देवगण, शिव से गंगा का विवाह कराने के लिए अपने साथ ले गए थे। जब गंगा की माँ मैत्री ने उन्हें घर पर न पाया तो जलमयी होने का शाप दे दिया। पुराणों और रामायण में गंगा को हिमालय और मैना (मनोरमा) के रूप में वर्णित किया गया है। कवि जी0 के0 सन्तोष द्वारा रचित 'मोक्षदायिनी गंगा' में उल्लिखित है कि गंगा विष्णु के बाएं पैर के अंगूठे के नख से प्रवाहित हुई है–

वामयादाम्बुजांगुष्ठनखस्त्रोतो विनिर्गताम्।
विष्णोर्बिभर्ति यां भक्त्या षिरसाहंनिषं ध्रुवः।।[13]

Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

एक बार गंगा जब जल में स्नान कर रही थी तो उनके अधोवस्त्र उठने से राजर्षि महाभिष के कामुक हो उठे। जिससे क्रोधित होकर पितामह ब्रह्मा ने दोनों को पृथ्वी पर उत्पन्न होने का श्राप दिया। कालान्तर में राजर्षि महाभिष ने गुरुकुल के सम्राट प्रतीप के घर पुत्र शांतनु के रूप में जन्म लिया। एक बार वन में शांतनु के पिता प्रतीप को एक कन्या मिली जिसे पति की कामना थी, उन्होंने उसे पुत्रवधु होने का आशीर्वाद दिया। प्रतीप ने राजपाठ शान्तनु को सौंप कर और उस कन्या के विषय में बताकर वनगमन किया। वह युवती गंगा थी। देवी गंगा का महाराज शान्तनु को पति रूप में चुनने के पीछे दो स्पष्ट कारण थे। पहला गंगा और महाभिष को ब्रह्मा के शापवश पृथ्वी पर जन्म लेकर पति–पत्नी बनना था। दूसरा गंगा को 8 वसुओं का उद्धार करने पृथ्वी पर आना था। क्योंकि एक बार आठ वसुओं में से सबसे बड़े वसु ने अपनी पत्नी के मोह में आकर अन्य सातों वसुओं के साथ मिलकर महर्षि वशिष्ठ की अलौकिक गाय नंदिनी का हरण किया था। जिसका दूध पीकर कोई भी हजार वर्षों तक युवा और जीवित रह सकता था। महर्षि वशिष्ठ ने इस अपराध के लिए सभी वसुओं को मानव योनि में जन्म लेने का शाप दिया। सात वसुओं को एक–एक वर्ष उपरान्त शापमुक्त तथा मुख्य अपराधी आठवें वसु को दीर्घ समय तक मानव योनि में रहने का शाप दिया। शापग्रस्त वसुओं ने मार्ग में जा रही गंगा को अपनी व्यथा बताई और उन्हें अपनी जननी बनकर शांतनु को पति रूप में स्वीकार करने की प्रार्थना की। हर वसु के जन्म लेने के पश्चात् वह उन्हें अपनी धारा में बहाकर भूलोक से मुक्ति दिलाए।

गंगा ने वसुओं की माता बनना स्वीकार कर लिया। पिता (प्रतीप) की आज्ञानुसार शांतनु ने गंगा के समक्ष अपनी धर्मपत्नी बनने का प्रस्ताव रखा। गंगा ने शांतनु से विवाह इस शर्त पर किया कि वे जो कुछ भी करेंगी तो उस विषय पर राजा कभी कोई प्रश्न नहीं करेंगे। शान्तनु और गंगा के आठ पुत्र हुए गंगा ने सातों पुत्रों को, जो एक शापवश पृथ्वी पर जन्में थे। उनको एक के बाद एक शापमुक्त कर गंगा में प्रवाहित कर दिया। जब गंगा अन्तिम पुत्र का वध करने जा रही थी तो शांतनु के रोकने पर गंगा तुरन्त वहाँ से चली गई, वही आठवां वसु देवव्रत भीष्म के नाम से विख्यात हुआ।[14] देवव्रत को गंगा ने इच्छामृत्यु का वरदान दिया था। अन्य कथनानुसार ब्रह्मदेव के कमंडल से गंगा का जन्म माना जाता है। इस विषय में दो मत है। प्रथम–वामन रूप में राक्षस बलि से संसार को मुक्त कराने के बाद ब्रह्मदेव ने भगवान विष्णु के चरण धोए। उस चरणामृत को कमंडल में भर लिया, द्वितीय मत भगवान शिव से संबंधित है। जिन्होंने संगीत के दुरूप्रयोग से पीड़ित राग–रागिनी का उद्धार किया। जब भगवान शिव ने नारद मुनि, ब्रह्मदेव तथा भगवान विष्णु के समक्ष गान गाया तो इस संगीत के प्रभाव से भगवान विष्णु का पसीना बहकर निकलने लगा। जिसे ब्रह्मा जी ने कमंडल में भर लिया। इसी कमंडल के जल से देवी गंगा का जन्म हुआ और वह ब्रह्मा के संरक्षण में स्वर्ग में रहने लगी।[15] सर्वाधिक मान्य पौराणिक गंगावतरण की कथा राजा सगर की है। राजा सगर ने जादुई रूप से साठ हजार पुत्रों की प्राप्ति की। एक दिन मुनि, वशिष्ठ की अनुमति से राजा सगर ने अश्वमेघ नामक महायज्ञ करने का विचार किया। सगर ने हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य हरित भाग पर एक विशाल यज्ञमंडप बनवाया। अश्वमेध घोड़े की रक्षा का भार अपने 60000 पुत्रों को सौंप दिया। तभी यज्ञ की संभावित सफलता से आंशकित ईर्ष्यालु इन्द्र ने घोड़ा चुरा लिया तथा रसातल में जाकर कपिल मुनि के आश्रम में बाँध दिया।

सगर पुत्र घोड़े की खोज में योगरत कपिल मुनि के समीप पहुँचे। कपिल मुनि को घोड़े का वास्तविक अपहरणकर्ता समझ राजपुत्रों ने उन्हें दुर्वचन कहे तथा मारने का प्रयत्न भी किया। तपस्या में लीन मुनि ने हजारों वर्षों बाद उद्घाटित अपने नेत्रों की संहारक ज्वाला से 60 हजार सगर पुत्रों को वहीं पर भस्म कर दिया। सगर पुत्रों की आत्माएँ अन्तिम संस्कार के अभाव में भूत बनकर भटकने लगी। सगर के पौत्र अंशुमन ने अपने चाचाओं के भस्माभूत अवशेषों के तर्पण हेतु कपिल मुनि से उपाय पूछा मुनि ने बताया कि– अंशुमान के पौत्र भागीरथ जो समस्त तत्वों के ज्ञाता होगें वहीं अपने परम तप से गंगा को धरती पर लाकर मृतात्माओं का उद्धार करेंगे। अंशुमन के विवाहोपरान्त दिलीप ने जन्म लिया। उन्होंने भी आत्माओं की मुक्ति का असफल प्रयास किया। दिलीप के बाद भागीरथ का जन्म हुआ। भागीरथ अपने पूर्वजों की मुक्ति का संकल्प लेकर, राज्यभार श्रेष्ठ मंत्रीगणों को सौंपकर, गोकर्ण नामक तीर्थ पर कठोर तपस्या करने लगे। ब्रह्माजी ने प्रसन्न होकर भगीरथ को सन्तान प्राप्ति का भी वर

दिया किन्तु गंगावतरण को लेकर आशंका जताई, क्योंकि गंगा जी का तीव्र वेग पृथ्वी के लिए असहनीय था। गंगा के वेग को नियंत्रण में केवल महादेव ही कर सकते थे। ब्रह्मा की सलाह पर भगीरथ ने केवल वायु का भक्षण कर, पैर के अंगूठे पर खड़े होकर महादेव की कठिन तपस्या की। महादेव ने प्रसन्न होकर गंगा जी को शिरोधार्य करने का विश्वास दिलाया। गंगा अपने प्रचण्ड वेग से शिव को बहाकर पाताल ले जाना चाहती थी। महादेव ने गंगा का अहंकार भाप वेगवती धाराओं को जटाजूट में उलझा दिया। यह देख भागीरथ ने गंगा के प्रमोक्षण हेतु पुनः महादेव की आराधना की, महादेव ने प्रसन्न हो जटाजूट की एक लट खोल दी जहाँ से गंगा एक धारा के रूप में हिमालय के बिन्दुसर (बिन्दु सरोवर) पर गिरी। बिन्दुसर में गिरने के उपरान्त गंगा की सात धाराएँ हो गई। तीन पूर्व दिशा में चली और तीन पश्चिम में, पूर्वी धाराएँ– हलादिनी, पावनी, नलिनी थी। पश्चिमी धाराएँ सुचक्षु , सीता और सिन्धु। सातवीं धारा भगीरथ के साथ–साथ जाने लगी। गन्तव्य दूर होने के कारण महादेव ने भगीरथ को अपना रथ प्रदान किया भगीरथ के रथ के पीछे अनुसरण करने से पूर्व गंगा ने चेतावनी दी कि– मैं तुम्हारा अनुसरण करूँगी परन्तु तुम पीछे मुड़कर मत देखना। काशी में आशंकित हो भगीरथ ने मुड़कर देखा तो गंगा वचन टूटने पर सीधे सागर की ओर चली गई। जहाँ सगर पुत्रों का उद्धार हुआ।[16] गंगा की धारा प्रवाहित होते हुए सगर पुत्रों के पापों को नष्ट कर सागर में विसर्जित होकर पाताल की ओर चली गई। दिलीपपुत्र भगीरथ का श्रम सफल हुआ।

विश्व में भारत का गौरव, आध्यात्मिक रूपी चेतना, पुण्यदा गंगा का नाम वृहद अर्थों के लिए लिया जाता है। भारत की सांस्कृतिक धरोहर गंगा विभिन्न रूपों में विश्व कल्याण के लिए तत्पर रहती है। गंगानदी सरिता एवं संस्कृति देवी के रूप में सांस्कृतिक आस्था का चिरकाल से संबल रही है। गंगा एक ओर जहाँ जनसंस्कृति का प्रतीक है। तो दूसरी ओर देशभूमियों में व्याप्त भारतीय सांस्कृतिक चेतना का विकास है। गंगा कला–संस्कृति रूप में सदियों से जनमानस की आध्यात्मिक जिज्ञासा की प्यास बुझाती रही है। यह अनेकता में एकता समेटे हुए चिर प्रेरणास्त्रोत होकर विवकेशील जीवन का आदर्श भी बन रही है। इस प्रकार गंगा हमारी आस्था में ही नहीं बल्कि हमारे अध्ययन ग्रन्थों में भी रची–बसी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. वैदिक सूक्त चयनिका पृ० सं० 165– 166
2. मोक्षदायिनी गंगा, पृ० सं० 93
3. मोक्षदायिनी गंगा, पृ० सं० 150–151
4. मोक्षदायिनी गंगा, पृ० सं० 140
5. श्रीमद्भगवतगीता 10. 31 पृ० सं०
6. मोक्षदायिनी गंगा, पृ० सं० 140
7. गंगालहरी 1.1
8. शब्दकल्पद्रुम मोक्षदायिनी गंगा पृ० सं० 15
9. मोक्षदायिनी गंगा पृ० सं० 48
10. गंगोत्री (एचटीएम) उत्तराखण्ड सरकार अभिगमन तिथि 2009
11. मोक्षदायिनी गंगा पृ० सं० 47
12. विष्णु पुराण 2/8/109, कल्पतरुतीर्थ पृ० सं० 161
13. मोक्षदायिनी गंगा पृ० सं० 21–22
14. महाभारत, भारतीय साहित्य संग्रह अभिगमन तिथि 23 जून 2009
15. पौराणिक गंगोत्री अभिगमन तिथि 23 जून 2009
16. मोक्षदायिनी गंगा, पृ० सं० 28–29